मोड्यूल 6 : आपसी बातचीत

सत्र 2 : प्रश्न पूछना

दिवस : 5
समयावधि : 1 घंटा 30 मि.

प्रयोजन

आशा को यह जानकारी देना कि विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को कैसे और कब ठीक प्रकार से पूछा जाये ।

उद्देश्य

सत्र के अंत में आशा में निम्न योग्यता आएँगी –

1. संक्षिप्त प्रश्न, बड़े उत्तर वाले प्रश्न, तहकीकात करने वाले प्रश्न तथा उत्तर की तरफ इशारा करने वाले प्रश्नों की परिभाषा बताना और प्रत्येक के उदाहरण देना।

सामग्री

- एक बड़े कागज़ या ब्लैक–बोर्ड पर बनी प्रश्नों की तालिका।
- अभ्यासपत्र 1 : आलेखित भूमिका नाटकः प्रश्नों का अभ्यास।
- प्रशिक्षक प्रपत्र 1 : आलेखित भूमिका नाटकः प्रश्नों का अभ्यास – प्रशिक्षकों के लिए उत्तर

तैयारी

- प्रश्न तालिका को फ्लिप चार्ट पेपर या ब्लॅक बोर्ड पर उतारें।
- प्रशिक्षणार्थियों की संख्या के अनुसार अभ्यासपत्र 1 की प्रतियाँ बनाए।

प्रशिक्षण विधि

<u>प्रस्तुति</u> (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षणार्थियों को निम्न 2 प्रश्न सुनने को कहें –
   - आपके शिशु का वज़न कितना है ?
   - क्या आप बतायेंगी कि आपका शिशु दिन में क्या और कितना खाता है ?

   उनसे पूछें कि इन प्रश्नों में क्या अन्तर है ?
2. उनके उत्तर सुनें। उनके सही उत्तरों और टिप्पणियों की प्रशंसा करके आशाओं को प्रोत्साहित करें। यदि कुछ छूट गया हो तो, निम्न उत्तरों को देखकर पूरा करें :
   - पहले प्रश्न (आपके शिशु का वज़न क्या है ?) का उत्तर ठीक–ठीक वज़न बताकर दिया जायेगा (जैसे 12 कि.ग्रा.) या "मुझे नहीं पता"। ऐसा प्रश्न **संक्षिप्त उत्तर वाला प्रश्न** है और इसका उत्तर लम्बा नहीं हो सकता। नवजात शिशु के फॉर्मों में अधिकांश प्रश्न संक्षिप्त उत्तर वाले हैं क्योंकि हमें केवल कुछ विशिष्ट जानकारी या तथ्य मालूम करने हैं (आपकी उम्र कितनी है? क्या आप विवाहित हैं? क्या शिशु ठीक से आहार ले रहा है? आदि)।

- दूसरे प्रश्न का उत्तर कुछ ज्यादा लंबा होगा (उदाहरण के लिये – उसने दिन में 3 बार स्तनपान किया और सुबह एक चपाती और थोड़ी सी दाल खायी। दोपहर बाद थोड़ा सा चावल और सब्जी खायी। इस तरह का प्रश्न को **लंबे उत्तर वाला प्रश्न** कहते हैं। महिला के अनुभव के आधार पर प्रश्न का लम्बा उत्तर होगा)।

3. तैयार की गयी प्रश्न तालिका (विषय–वस्तू बाक्स) को बोर्ड पर लगाये।
4. प्रत्येक खाना से पढ़ कर समझायें; प्रत्येक प्रश्न पढ़ कर समझायें। ध्यान रहें कि **तहकीकात वाले प्रश्न** बड़े उत्तर वाले होते हैं और प्रश्न पूछने का उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करना होता है (उदा. क्या आप बतायेंगी कि वह क्या–क्या खाता है ?)। **उत्तर की ओर इशारा करने वाले प्रश्न** प्रयोग नहीं करने चाहिये। इनसे उत्तर प्रभावित हो जाता हैं। (उदा. – आपको भी लगता है कि स्तनपान बोतल के दूध से अधिक अच्छा होता है, है ना?)

प्रश्नतालिका

संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्न	बड़े उत्तर वाले प्रश्न	तहकीक़ात वाले प्रश्न	उत्तर की तरफ इशारा करने वाले प्रश्न
कब प्रयोग करें : जब विशिष्ट उत्तर चाहिये हों। पिछली जानकारी लेने या आपात स्थिति में पूछे प्रश्न	लक्षणों और विचारों के बारे जब विस्तृत जानकारी चाहिये हो। नमस्कार,, पिछली जानकारी लेते समय और सलाह देते समय	जब और अधिक जानकारी लेनी हो। पिछली जानकारी लेते समय और सलाह देते समय	कम से कम प्रयोग करें क्यों कि ऐसे प्रश्नों से बहुत कम जानकारी प्राप्त होती है।
आवश्यक है : संक्षिप्त और सटीक उत्तर – अधिकतर 'हाँ' या 'नहीं' में	बड़ा उत्तर; इसके द्वारा अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जा सकता है	पिछले जवाब या कथन के बारे में समझाना	जवाब देने वाला प्रश्न से प्रभावित हो जाता है।
उदाहरण : आपके कितने बच्चे हैं? क्या आपको खून बह रहा हैं?	क्या आप अपने दर्द के बार में बतायेंगी? इससे आपको कैसा लग रहा हैं?	क्या आप अपने दर्द के बारे में ज्यादा बतायेंगी ? आपको ऐसा क्यों लगता है कि कोलोस्ट्रम हानिकारक है?	क्या आप नहीं समझती कि आपका प्रसव अस्पताल में होना चाहिए?
नमूने के तौर पर कुछ वाक्य बनायें 1. 2.	1. 2.	1. 2.	1. 2.

स्त्रोतः पाथ (प्रोग्राम फॉर एप्रोप्रिएट टेक्नॉलॉजी इन हेल्थ) संस्था के आपसी बातचीत तथा परामर्श यह चार दिन के अभ्यासक्रम से रूपान्तरित

5. प्रशिक्षणार्थियों से प्रत्येक प्रकार के प्रश्न का अपने कार्य क्षेत्र से जुड़ा उदाहरण देने को कहें। प्रश्नतालिका के अंत में प्रश्नों के कुछ नमूने लिखें।

आलेखित भूमिका नाटक (25 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षक आलेखित भूमिका नाटक स्वयं प्रस्तुत करें।
2. भूमिका नाटक के बाद प्रशिक्षणार्थियों ने जो कुछ अनुभव किया, उसके बारे में चर्चा करें।
3. प्रशिक्षणार्थियों से पूछें कि विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछना क्यों आवश्यक है ? (संक्षिप्त उत्तर वाले प्रश्नों से तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं, या हाँ/नहीं में उत्तर दिये जाते हैं। किसी की हालत, विचारों या अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिये बड़े उत्तर वाले प्रश्न पूछे जाते हैं। और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये तहकीकात वाले प्रश्न पूछे जाने चाहिये)।
4. यह अवश्य बतायें कि कुछ स्थितियों में यदि बड़े उत्तर वाले प्रश्न न पूछे गए, तो महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने से रह जायेगी। भूमिका नाटक में प्रीति ने यदि आहार के संबंध में बड़े उत्तर वाला प्रश्न न पूछा होता, तो इस समस्या के बारे में कुछ भी पता न चलता; बच्चे का वज़न कम हो जाता, वह कमज़ोर हो जाता, और उसमें संक्रमण से लड़ने की शक्ति भी समाप्त हो जाती।

अभ्यास: विभिन्न प्रकार के प्रश्नों में अन्तर पता करना (30 मि.)

प्रशिक्षकों हेतु सुझाव :

1. प्रशिक्षणार्थियों को भूमिका नाटक का आलेख बाँटें। उनसे एक–एक प्रश्न पढ़ने को कहें और खाली जगह में लिखने को कहें कि प्रश्न संक्षिप्त उत्तर वाला है, बड़े उत्तर वाला है, तहक़ीकात वाला है, या उत्तर –की ओर इशारा करने वाला है। (20 मि.)
2. जाँच के लिये सभी से उत्तर–पुस्तिकायें वापस ले लें।
3. उत्तरों की समीक्षा करें। उन पर चर्चा करें और समझायें। (10 मि.)

सारांश (5 मि.)

- किसी प्रशिक्षणार्थी से संक्षिप्त और बड़े उत्तर वाले प्रश्न में अन्तर बताने को कहें।
- दूसरे प्रशिक्षणार्थी से पूछें कि तहकीकात करने वाला प्रश्न कैसे होता है और इनका प्रयोग कब किया जाये।
- किसी तीसरे प्रशिक्षणार्थी से बड़े उत्तर वाले प्रश्न का उदाहरण देने को कहें।
- कुछ गलतियाँ हों तो सुधारे, और महत्वपूर्ण जानकारी दोहराएँ।
- आशाओं की उनके अच्छे काम के लिए सराहना करें।

सत्र का मूल्यांकन :

उद्देश्य	आंकलन विधि	परिणाम
संक्षिप्त या लंबे उत्तर वाले या तहकीकात करने वाले प्रश्नों की परिभाषा बताना, और प्रत्येक का एक उदाहरण देना	आलेखित भूमिका नाटकः प्रश्नों का अभ्यास	आलेखित भूमिका नाटकः प्रश्नों के अभ्यास के प्रत्येक आशा व्दारा लिखें उत्तरपत्र जिन्हें प्रशिक्षक ने जॉचकर अंक दिये है